“धर्म, भारतीय दर्शन और वसुधैव कुटुम्बकम्”

धर्म (Dharma)

अर्थ:
‘धर्म’ शब्द संस्कृत की ‘धृ’ धातु से बना है, जिसका तात्पर्य है – धारण करना या संभालना। धर्म वह शक्ति है जो न केवल संसार को व्यवस्थित रखती है, बल्कि मानव जीवन को भी नैतिकता, सदाचार और कल्याण की दिशा में प्रेरित करती है।

परिभाषा:
धर्म वह आचरण है जो व्यक्ति और समाज दोनों के लिए हितकारी एवं कल्याणकारी हो।

उद्देश्य:
धर्म का मूल उद्देश्य मानव को लौकिक सुख (संसारिक समृद्धि) और पारलौकिक मोक्ष (आध्यात्मिक मुक्ति) की प्राप्ति के मार्ग पर अग्रसर करना है।

महत्व:
धर्म को जीवन जीने की सर्वोत्तम कला कहा गया है। महाभारत के अनुसार, धर्म वह सिद्धांत है जो समाज को नैतिक और आध्यात्मिक आधार पर एकसूत्र में बाँधता है। यह मानवता, न्याय और सत्य की भावना को जीवित रखता है।

उदाहरण:
सत्य बोलना, अहिंसा का पालन, धैर्य रखना, क्षमा करना, इन्द्रियों पर नियंत्रण रखना और चोरी न करना — ये सभी धर्म के प्रमुख गुण हैं।

भारतीय दर्शन (Indian Philosophy)

अर्थ:
'दर्शन' शब्द का शाब्दिक अर्थ है 'तत्व को देखना या समझना'। भारतीय दर्शन केवल विचार या तर्क का विषय नहीं, बल्कि जीवन के दुखों से मुक्ति पाने का एक व्यवहारिक मार्ग है।

उत्पत्ति:
भारतीय दर्शन की उत्पत्ति इस विचार से हुई कि संसार दुखों से भरा है और इन दुखों की समाप्ति तथा आत्मा की परम स्वतंत्रता — मोक्ष — ही जीवन का अंतिम लक्ष्य है।

मुख्य विशेषताएँ:
यह केवल सैद्धांतिक नहीं, बल्कि व्यवहारिक जीवन से गहराई से जुड़ा हुआ है।
मोक्ष को सर्वोच्च लक्ष्य माना गया है।
कर्म और पुनर्जन्म के सिद्धांतों पर आधारित है।
आत्मा के अस्तित्व में विश्वास रखता है (चार्वाक दर्शन को छोड़कर)।

प्रकार:
भारतीय दर्शन को दो प्रमुख वर्गों में विभाजित किया गया है —

1. आस्तिक दर्शन – वे जो वेदों की प्रामाणिकता को स्वीकार करते हैं, जैसे न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा और वेदान्त।

2. नास्तिक दर्शन – वे जो वेदों की मान्यता को अस्वीकार करते हैं, जैसे चार्वाक, जैन और बौद्ध दर्शन।

वसुधैव कुटुम्बकम् (Vasudhaiva Kutumbakam)

अर्थ:
'वसुधैव कुटुम्बकम्' संस्कृत का प्रसिद्ध वाक्यांश है, जो महा उपनिषद से लिया गया है।
इसमें "वसुधा" का अर्थ है पृथ्वी, "एव" का अर्थ है ही, और "कुटुम्बकम्" का अर्थ है परिवार।
अर्थात् — "सम्पूर्ण पृथ्वी ही एक परिवार है।"

मूल सिद्धांत:
यह विचार मानवता की सार्वभौमिक एकता का प्रतीक है। यह बताता है कि समस्त जीव-जगत एक दूसरे से जुड़े हुए हैं और सबका कल्याण परस्पर सहयोग पर निर्भर करता है।

महत्व:
यह विचारधारा मानवता, एकता और सहिष्णुता का सन्देश देती है।
यह सिखाती है कि धर्म, जाति, भाषा या राष्ट्र की सीमाओं से ऊपर उठकर सभी को समान सम्मान दिया जाना चाहिए।
वर्तमान युग में जब समाज संघर्ष और विभाजन की ओर बढ़ रहा है, तब यह सिद्धांत वैश्विक शांति और समरसता का आधार बन सकता है।
हाल ही में भारत की G-20 अध्यक्षता का मूल मंत्र भी इसी पर आधारित था — "एक पृथ्वी · एक परिवार · एक भविष्य" (One Earth · One Family · One Future)।

सारांश:
धर्म हमें सही जीवन पथ दिखाता है, दर्शन उस पथ के सत्य और लक्ष्य को समझाता है, और "वसुधैव कुटुम्बकम्" उस लक्ष्य को वैश्विक दृष्टिकोण से जोड़ता है। इन तीनों के समन्वय से ही भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक परंपरा की गहराई प्रकट होती है।